विज्ञान प्रसार - इंडियन साइंस न्यूज एंड फीचर्स सर्विस

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 104वीं राष्ट्रीय विज्ञान कांग्रेस का शुभांरभ किया

3 जनवरी, 2017 को माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आधंप्रदेश के तिरुपति में 104वीं राष्ट्रीय विज्ञान कांग्रेस का शुभांरभ किया। इस कार्यक्रम में देश भर से हजारों वैज्ञानिकों, विद्यार्थियों एवं नीतिनिर्माताओं द्वारा भागीदारी की गयी। यह आयोजन प्रतिवर्ष 3 से 7 जनवरी के दौरान आयोजित किया जाता है।

इस अवसर पर आंध्रप्रदेश के राज्यपाल श्री ई.एस. एल. नरसिम्हन, आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री एन. चंद्रबाबू नायडू एवं विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय एवं पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के कैबिनेट मंत्री डा. हर्षवर्धन सहित विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय एवं पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के राज्य मंत्री श्री वाय एस चैधरी एवं भारतीय विज्ञान कांग्रेस संघ के सभापति प्रोफेसर डी. नारायण राव एवं श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ए. दामोदरम भी उपस्थित थे।

उद्घाटन कार्यक्रम का शुभांरभ करते हुए माननीय अतिथियों के स्वागत भाषण में भारतीय विज्ञान कांग्रेस संघ के सभापति प्रोफेसर डी. नारायण राव ने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की नवीनतम विधाओं में भारतीय उपलब्धियों को रेखांकित किया। इसके अलावा उन्होंने सरकार द्वारा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास से संबंधित योजनाओं की सराहना करते हुए भारत को विकास के पथ पर आगे बढ़ने में इनके योगदान की चर्चा की। उन्होंने सरकार द्वारा विज्ञान से संबंधित विभिन्न अंतरराष्ट्रीय परियोजनाओं जैसे तीस मीटर टेलिस्टोप, लार्ज हेड्रान कोलाईडर, गुरुत्वीय तरंगों पर हो रहे अनुसंधानों का जिक्र भी किया। उन्होंने इस बात का भी उल्लेख किया कि स्वतंत्र भारत में शायद ही ऐसा कोई आयोजन होगा जिसमें प्रतिवर्ष भारत के प्रधानमंत्री भागीदारी करते हों। इस मायने में भी राष्ट्रीय विज्ञान कांग्रेस का महत्व बढ़ जाता है। उन्होंने कहा कि अब समय आ गया है कि देश को उच्च षिक्षा एवं शोध कार्य में ओर अधिक निवेश कराना होगा ताकि आधारभूत विज्ञान में अधिक से अधिक मौलिक शोध कार्य हो सके और उनके कार्यों के आधार पर ऐसी प्रौद्योगिकियों का विकास किया जा सके जो समाज के विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने में समर्थ हो।

राष्ट्रीय विज्ञान कांग्रेस को संबांधित करते हुए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय एवं पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के कैबिनेट मंत्री डा. हर्षवर्धन ने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत की समृद्ध परंपरा का उल्लेख किया। माननीय मंत्री महोदय ने कहा कि हमारे देश में चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, विश्वेश्वरैया, सीवी रमन जैसे वैज्ञानिक हुए हैं जिन्होंने विज्ञान को नए आयाम दिए। भारत ने मंगलयान का सफल प्रक्षेपण करने के साथ ही परमाणु ऊर्जा एवं अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्र में वैश्विक बिरादरी का ध्यारन आकर्षित किया। है।

हालांकि आज भी भारतीय विज्ञान के समक्ष अनेक प्रकार की चुनौतियां हैं लेकिन फिर भी वैज्ञानिक वर्ग अपने अथक प्रयास से विकास के पथ पर देश को अग्रसर करने का प्रयास कर रहे हैं।

हर्षवर्धन जी ने अपने उद्बोधन में इस बात पर जोर दिया कि किस प्रकार विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के प्रयोग से समाज के समक्ष उत्पन्न होने वाली समकालीन चुनौतियों को हल किया जा सके। उन्होंने कहा कि आज हमें कचरे से ऊर्जा बनाने के लिए ऐसी अभिनव एवं सरल प्रौद्योगिकियों की आवश्यकता है जो स्वच्छ भारत अभियान में भी सहयोग करें। हमें अपनी नदियों को साफ करने के लिए भी ऐसी प्रौद्योगिकी की जरूरत है जो नदियों को प्रदूषित होने से बचाए। इसी प्रकार हमें नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में अभी ऐसी प्रौद्योगिकीयों का विकास करना है जो हमारे देश में उपलब्ध नवीन ऊर्जा संसाधनों का भरपूर उपयोग करने में समर्थ हो। जलवायु परिवर्तन जैसी गंभीर चुनौती से निपटने के लिए भी विज्ञान मददगार साबित हो सकता है। इसी प्रकार विभिन्न प्रकार की बीमारियों के लिए टीकों का विकास किया गया है और इस दिशा में आगे भी शोध कार्य हो रहा है। हमें किसानों के उन्नति के लिए खेती एवं पशुपालन में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोगों को बढ़ाना है ताकि देश में विकास सभी तक पहुँच सके। इसके लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी ही हमारी सबसे अधिक सहायता कर सकते हैं।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की उपलब्धियों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार के प्रयास किए जा रहे है। पिछले दो सालों से अंतरराष्ट्रीय भारतीय विज्ञान सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इसी प्रकार अन्य आयोजन के माध्यम से लोगों को विज्ञान की उपलब्धियों एवं अनुप्रयोगों से अवगत कराया जा राहा है। हमारी सोच यही है कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के माध्यम से समाज को बहुमुखी विकास किया जा सके।

राष्ट्रीय विज्ञान कांग्रेस के शुभारंभ के अवसर पर आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने कहा कि शुन्य की खोज करके भारत ने विश्व में अहम योगदान दिया है। ज्यामिति का विकास भारत में हुआ और चंद्रशेखर सीमा जैसे प्रसिद्ध सिद्धांत का प्रतिपादन भी भारतीय वैज्ञानिक ने किया। लेकिन हमें यह बात भी ध्यान रखना चाहिए कि भारतीय भारत के बाहर कार्य करके नोबल प्राप्त कर सकते हैं तो भारत में भी इसी तरह के अवसर और सुविधाएं उपलब्ध होनी चाहिए जिससे भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा किए गए कार्य भी वैश्विक स्तर पर प्रसिद्धि पाएं। उन्होंने विज्ञान एवं

प्रौद्योगिकी द्वारा समकालीन समस्याओं के समाधान की सराहना भी की। उन्होंने कहा कि आज हमें बैंक जाने की आवश्यकता नहीं होती है। आज हमारा स्मार्ट फोन ही बैंक का अधिकतर काम कर लेता है। भीम जैसे एप के माध्यम से बैंकिग सुविधाओं में इजाफा हुआ है। आंध्रप्रदेश में हर परिवार को बहुत ही कम दाम पर फोन, इंटरनेट जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही है ताकि हर परिवार आधुनिक प्रौद्योगिकी से जुड़ सके।

माननीय प्रधानमंत्री का संबोधन

राष्ट्रीय विज्ञान कांग्रेस को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने सबसे पहले इस वर्ष की केंद्रित विषय वस्तु के लिए ''राष्ट्र के विकास में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का योगदान'' को उपयुक्त बाते हुए कहा कि सरकार का लक्ष्य है कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने में अपना योगदान दें। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने नवंबर में इस दुनिया से विदा हुए श्री एम. जी. के मेनन को भी याद किया और कहा कि देश ऐसे वैज्ञानिकों का सदा आभारी रहेगा जिन्होंने देश के विकास में अपना योगदान दिया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि कल के भविष्य के लिए हमें आज से सोचना होगा और वर्तमान में ऐसे कदम उठाने होंगे ताकि भविष्य सुनहरा हो। हमारे यहां वैज्ञानिक परंपरा रही है जो हमें नयी सोच की ओर प्रेरित करती रही हैं। इसलिए हमें अब मुलभूत विज्ञान और अनुप्रयोग विज्ञान दोनों को नवाचार से जोड़ना होगा ताकि विज्ञान के विकास के साथ-साथ विभिन्न समस्याओं का समाधान किया जा सके। प्रधानमंत्री जी ने महिलाओं को विज्ञान के क्षेत्र में अवसर प्रदान करने संबंधित वातावरण के निर्माण की बात कही। उन्होंने कहा देश तभी आगे बढ़ सकता है जब महिलाएं विज्ञान सहित हर क्षेत्र में अपना योगदान देगी।

प्रधानमंत्री ने जलवायु परिवर्तन, खाद्य सुरक्षा, पर्यावरण, स्वास्थ्य और स्वच्छ पेयजल और ऊर्जा आदि क्षेत्रों की विभिन्न चुनौतियों का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि हमें समाज के समक्ष उपस्थित विभिन्न समस्याओं की पहचान करके उन्हें विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के माध्यम से हल करने की कोषिश करनी चाहिए। प्रधानमंत्री ने पिछले वर्ष विमोचित किए गए प्रौद्योगिकी विजन 2035 दस्तावेज का भी उल्लेख करते हुए कहा कि सरकार चयनित बाहर क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकी का

विकास करने के लिए प्रयासरत है। इस दिशा में नीति आयोग का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि नीति आयोग समग्र सोच पर आधारित विज्ञान और प्रौद्योगिकी विजन के साथ देश के विकास के लिए विभिन्न संगठनों के सामंजस्य के साथ प्रयासरत है। प्रधानमंत्री ने कहा कि हमें सायबर व्यवस्था को भी समझना होगा। इससे हमें भविष्य में संभावित चुनौतियों से निपटने में सहायता मिलेगी। उन्होंने कहा कि आज हमें रोबोटिक्स, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल निर्माण, बिग-डाटा विश्लेषण, क्वांटम संचार एवं इंटरनेट से संबंधित विभिन्न प्रौद्योगिकियों में अपनी क्षमता को बढ़ाना है।

महासागरीय संसाधनों को समुचित उपयोग करने की दिशा में शोध कार्य करने के लिए हमें प्रयासों को ओर तेज करना होगा। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय गहरे समुद्र में उत्खनन संबंधी शोध कार्य में लगा है जिससे हम महसागरीय संसाधनों का अधिकतम उपयोग कर पाएंगे। इससे हम हमारे देश की सुरक्षा और समृद्धता को भी बढ़ा सकेंगे। प्रधानमंत्री ने कहा कि हमें वैश्विक मानकों के हिसाब से शोध कार्यों को आगे बढ़ाना होगा। इसके लिए आधारभूत ज्ञान को नवाचार, स्टार्ट-अप एवं उद्योगों से साझा करना होगा तभी हम टिकाऊ विकास की ओर बढ़ सकेंगे। सन् 2030 तक भारत विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्र में विश्व के शीर्ष तीन देशों में शामिल हो सके इसी दिशा में सरकार एवं वैज्ञानिक प्रयासरत हैं। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी देश के नागरिकों के समग्र विकास का आधार बने इसी दिशा में विज्ञानिकों को कार्य करना चाहिए।

राष्ट्रीय विकास में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भूमिका

राष्ट्रीय विज्ञान कांग्रेस हर वर्ष एक विशेष विषय-वस्तु पर केंद्रित रहती है। इस वर्ष राष्ट्रीय विज्ञान कांग्रेस की केन्द्रीय विषय वस्तु राष्ट्रीय विकास में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भूमिका थी। असल में किसी भी देश के विकास में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का अहम स्थान होता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए इस थीम को इस वर्ष के लिए चुना गया। राष्ट्रीय विज्ञान कांग्रेस में होने वाले प्रत्येक कार्यक्रम इसी विषय-वस्तु से संबंधित थे। इस आयोजन में देश भर से आए विभिन्न शोध पत्रों के लिए भी इसी विषय से संबंधित उप-विषयों को चुना गया था।

नवनीत कुमार गुप्ता

02.01.2017